दिनांक 07 दिसम्बर, 2011 को वाराणसी में आयोजित महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के दीक्षान्त समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का सम्बोधन

सम्मानीय मुख्य अतिथि श्री डी0आर0 मेहता, प्रदेश के शिक्षा मंत्री, माननीय श्री राकेश धर त्रिपाठी, कुलपति डा0 पृथ्वीश नाग, विद्यापरिषद् एवं कार्यपरिषद के सदस्यगण, सभ्रान्त नागरिकगण, अध्यापक बन्धुओं, प्रिय विद्यार्थियों, विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यगण एवं आमंत्रित अतिथिगण तथा पत्रकार बन्धुओं,

यह मेरे लिए हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के 33वें दीक्षान्त समारोह में आप सबके बीच आने का अवसर मिला। हमारे बीच आज के मुख्य अतिथि पद्मभूषण, श्री

डी0आर0 मेहता मौजूद हैं। श्री मेहता ने **Royal Institute of Public Administration, London** एवं **MIT Sloan School of Management** में शिक्षा प्राप्त की एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा के उच्च पदों पर राजस्थान व भारत सरकार में कार्य किया। इन्होंने सेबी **(SEBI)** के अध्यक्ष तथा रिजर्व बैंक के **Dy. Governor** का भी दायित्व संभाला है। वर्तमान में श्री मेहता समाज के विकलांगजनों को कृत्रिम अंग प्रदान कराने वाली संस्था ''भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति'' के संस्थापक व मुख्य संरक्षक भी हैं और संस्था ने अब तक इनके संरक्षण में लगभग 12 लाख से अधिक विकलांगजनों को कृत्रिम अंग व सहायक उपकरण, न केवल भारत अपितु अनेक देशों में उपलब्ध कराये हैं और इतनी ही विलक्षण बात है कि सारा

कार्य निःशुल्क शुद्ध सेवा भाव से किया जाता है। मैं, ऐसी विलक्षण प्रतिभा का यहाँ स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ।

यह हम सबके लिये गौरव की बात है कि पौराणिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक नगरी वाराणसी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पवित्र कर–कमलों से स्थापित यह विश्वविद्यालय आज अपना 33वां दीक्षान्त समारोह आयोजित कर रहा है।

वाराणसी आने का अवसर मुझे अनेक बार मिला है। जब भी मैं यहां आता हूँ तो इस नगर की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियां मुझे बहुत अभिभूत करती हैं। देश की सांस्कृतिक नगरी एवं विद्यानगरी के रूप में काशी की प्रतिष्ठा प्राचीन काल से रही है। इसे सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों के महान आचार्य, सन्त, साधक एवं

विद्वानों ने अपनी विद्या साधना एवं विचार साधना के लिए चुना। महर्षि वेदव्यास, तीर्थकंर पार्श्वनाथ, भगवान बुद्ध, आदि शंकराचार्य, संत तुलसीदास, चैतन्य महाप्रभु, स्वामी रामानन्द, भक्त रैदास, संत कबीर, गुरू नानकदेव, दाराशिकोह आदि असंख्या नाम इस श्रृंखला में उद्धत किये जा सकते हैं। सम्भवतः ऐसा गौरव विश्व के किसी नगर को शायद ही मिला है। अतः यह विश्व के महान विचारों की राजधानी कही जा सकती है।

मैंने श्री विद्यानिवास मिश्र जी का एक लेख पढ़ा था जिसमें उन्होंने लिखा है कि –''ऐसा कोई भी समय नहीं आएगा कि काशी में कोई मूर्धन्य साधक न हो, मूर्धन्य विद्वान न हो, मूर्धन्य कलाकार न हो, मूर्धन्य रचनाकार न हो, मूर्धन्य वंचक न हो, मूर्धन्य पाखंडी न हो,

मूर्धन्य जौहरी न हो–– यह हो सकता है कि वह काफी समय तक प्रकट न हो, छिपा हो, यह हो सकता है कि उसकी कीमत लोग उसके समय में न आंक सकें, पर ऐसे मूर्धन्य व्यक्तियों की श्रृंखला ही वस्तुतः काशी है।''

किसी भी विश्वविद्यालय के लिए दीक्षान्त समारोह एक विशिष्ट अवसर होता है, जब उसके विद्यार्थी अपने–अपने क्षेत्रों में निपुणता और विशेषज्ञता हासिल कर उपाधि, पदक, पुरस्कार अर्जित करने एवं भावी जीवन के लिए दिशा–निर्देश पाने के लिए एकत्रित होते हैं। उन्हें ज्ञान की गरिमामयी और समृद्ध विरासत सौंपी जाती है, ताकि उस विरासत से वे समाज, राष्ट्र और विश्व के विकास में अपनी सार्थक भूमिका निभा सकें।

दीक्षान्त समारोह का अवसर केवल अपनी उपलब्धियों पर संतुष्टि एवं गर्व करने का क्षण ही नहीं, बल्कि भविष्य में प्रस्तुत होने वाली संभावित समस्याओं को पहचानने तथा उनके निराकरण के लिए आत्म–मंथन का समय भी है। अपने कार्य से संबंधित क्षमताओं तथा कौशल में विकास का उद्यम तथा ज्ञानार्जन का क्रम जीवन भर चलता रहता है। आपको सदैव स्मरण रखना चाहिए कि परीक्षाओं में सफलता तथा दीक्षान्त समारोह में उपाधि की प्राप्ति से ज्ञान अर्जन एवं सृजन का अन्त नहीं हो जाता। इसलिए इस अवसर पर मैं आपसे आग्रह करूंगा कि तीव्र गति से विश्व में हो रहे परिवर्तनों की दशा–दिशा तथा उसके परिणामों को समझकर आप निरन्तर आगे बढ़ने को तत्पर रहें।

यह विश्वविद्यालय, यहां शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और समस्त विश्वविद्यालय परिवार बहुत सौभाग्यशाली हैं, क्योंकि इनके साथ हमारी एक महान विरासत तथा अत्यन्त गौरवशाली परम्परा जुड़ी हुई है। स्वतंत्रता आन्दोलन के केन्द्र रहे इस विश्वविद्यालय ने देश का वैचारिक मार्गदर्शन दिया और राष्ट्रीय शिक्षा के केन्द्र के रूप में इस विश्वविद्यालय की एक विशिष्ट पहचान रही है। विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति डा0 भगवानदास से लेकर आचार्य नरेन्द्र देव सहित विश्वविद्यालय की यशस्वी कुलपति परम्परा देश के उच्च शिक्षा के इतिहास में अद्वितीय है।

स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाना एक बड़ी चुनौती थी जिसे हमारे देश के कर्णधारों ने समर्पित

भाव से स्वीकार किया। वस्तुतः हम विकास की दिशा में आगे बढ़े और बढ़ रहे हैं। पूरा विश्व भारत को एक विकासशील आर्थिक शक्ति के रूप में देखता है। इसका श्रेय प्रमुख रूप से उन वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, चिकित्सकों, अर्थशास्त्रियों आदि को है, जो किसी न किसी विश्वविद्यालय अथवा संस्थान से शिक्षित–प्रशिक्षित हुए हैं। इस दृष्टि से देखें तो हमारे विश्वविद्यालय राष्ट्र के विकास का गोमुख हैं। जैसे–जैसे विकास की नयी–नयी चुनौतियां हमारे सामने आती जा रही हैं हमारे विश्वविद्यालयों को उनका सामना करने के लिए तैयार होना है।

हमें अपने विश्वविद्यालयों में इस प्रकार का शैक्षिक ढांचा तैयार करना होगा जो भौतिक और सांस्कृतिक विकास के संतुलन को साध

सके। हमें सूचनाओं के अम्बार से लदे संवेदना–हीन शिक्षितों की फौज तैयार नहीं करनी, बल्कि ऐसी प्रतिभाओं को गढ़ना है, जो राष्ट्र की भौतिक प्रगति के सूत्रधार तो बनें ही साथ ही भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्य भी उनकी चेतना की धमनियों में बहते हों। हमने अपने संविधान को जिन मूल्यों की नींव पर खड़ा किया है वे हैं–– समता, धर्मनिरपेक्षता, मौलिक अधिकारों का संरक्षण और लोकतंत्र। हमें अपने विश्वविद्यालयों की शिक्षा में इन मूल्यों को समाहित करना होगा। तब जो प्रतिभाएं उनकी कोख से जन्मेंगी वे देश के भौतिक और सांस्कृतिक विकास का सेतु बन सकेंगी। याद रखिये शिक्षा जीविका के लिए नहीं है जीवन के लिए है।

विश्व के अनेक देश शिक्षा एवं उच्च शिक्षा को अपनी सामाजिक नीतियों में शीर्ष प्राथमिकता प्रदान करने के परिणाम स्वरूप आज ज्ञान–समाज बनकर तकनीकी तथा आर्थिक दृष्टि से विकसित देशों की पंक्ति में अग्रिम हैं। हमारी शैक्षिक संस्थाओं का लक्ष्य और प्रयास यही होना चाहिए कि कार्य कुशल होने के साथ–साथ अध्ययन कर रहे विद्यार्थी श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों और आदर्शो को आत्मसात कर सच्चे नागरिक बनें।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि– ''सही राष्ट्रीय जीवन की शुरूआत व्यक्ति से ही होती है। भ्रष्टाचार लालच और बिना कुछ किये जल्दी धनवान बनने की चाह से होती है। इसलिये

समाज को ऐसे मूल्यों का समावेश करना होगा जो ईमानदारी और सच्चाई को सम्मान दें।''

अच्छी शिक्षा केवल पुस्तकों के पठन–पाठन तक ही सीमित नहीं है। विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं नैतिक विकास के लिए शिक्षकों को भी अपने व्यवहार, वाणी तथा चिन्तन से उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करना होता है। मैं चाहूंगा कि हमारी शैक्षिक संस्थानों का वातावरण इस प्रकार का हो कि मौलिक विचारों का सृजन, उच्च स्तरीय शोध और विद्यार्थियों एवं अध्यापकों में ज्ञान एवं कर्म के महत्व की समुचित पहचान उनके दैनिक जीवन का अभिन्न अंग हो। आप कभी न भूलें कि श्रेष्ठ शिक्षा वह नहीं जो केवल

भौतिक सुखों का साधन बने। सच्ची शिक्षा वह है जो जीवन और वातावरण में सामंजस्य स्थापित करे।

यह दीक्षान्त बेला है, शिक्षान्त बेला नहीं। शिक्षा का कभी अन्त नहीं होता। यहां उपाधि प्राप्त करके आपको छह मित्र बनाने होंगे– क्या, क्यों, कैसे, कौन, कहां, कब और कितना। यह आपकी उस जिज्ञासा के प्रस्थान बिन्दु हैं जो आपके ज्ञान को अद्यतन बनाए रखेंगे।

अन्त में, मैं उन समस्त स्नातकों को अपनी हार्दिक बधाई देता हूं जिन्होंने आज उपाधि एवं पदक प्राप्त किये हैं और आज डिग्री प्राप्त करने वाले सभी छात्र एवं छात्राओं को उनके उज्जवल

भविष्य की कामना करते हुए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं और आशीर्वाद देता हूं।

धन्यवाद – नमस्कार।